"आकांक्षी युवा, लोकतांत्रिक भारत और साझा भविष्य " विषय पर जयपुर में आयोजित सम्मेलन के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

"आकांक्षी युवा, लोकतांत्रिक भारत और साझा भविष्य" विषय पर युवा संवाद कार्यक्रम में हमारे बीच में राजस्थान विश्वविद्यालय की कुलपति श्रीमती कटेजा जी, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज के वाइस चांसलर श्री वी. के. कपूर जी और विभिन्न महाविद्यालयों के संचालकगण, अतिथिगण, नये भारत के नये सपने को लेकर आए मेरे सभी आकांक्षी नौजवान साथियों, मैं आपकी आंखों में उमंग, उत्साह, लक्ष्य और नये भारत बनाने के सपने को देख रहा हूं। मुझे विश्वास है कि हम नये भारत के सपने को पूरा कर पायेंगे और प्रधान मंत्री जी ने जो कहा है कि वर्ष 2047 में भारत विकसित भारत बनेगा, तो वह आपके प्रयासों से, आपकी आकांक्षाओं से, आपकी उम्मीदों से ही हम नये भारत का निर्माण कर पायेंगे।

नौजवान साथियो, हमारे देश का भविष्य, उम्मीद, हमारे नौजवानों से है। इन्हीं आकांक्षाओं को लेकर, आशाओं को लेकर, उम्मीदों को लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं।

अभी हमारी चार महिला छात्राओं ने अपने विचारों को रखा, अपने अनुभवों को साझा किया और नये भारत के सपनों को पूरा करने के लिए विचार रखे। मैं देख रहा हूं कि यहां पर जिस तरीके का उत्साह, उमंग, आत्मविश्वास है, वह आत्मविश्वास आने वाले समय में जो परिणाम लायेगा, तो वह मेरे नौजवानों की ताकत के बलबूते पर लेकर आएगा।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश होने के कारण आज हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम लोकतांत्रिक मूल्यों के आधार पर, एक साझा भविष्य के आधार पर हमारी कार्य संस्कृति, संस्कार, विचार, वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति के आधार पर, कि हम पूरे विश्व को एक परिवार मानकर, एक भविष्य मानकर किस तरीके से आने वाले समय के अन्दर, हमारे साझा लोकतांत्रिक मूल्यों के आधार पर नये भारत का निर्माण ही नहीं, पूरे विश्व के नये निर्माण की तरफ बढ़ें। इसकी जिम्मेदारी इस लोकतांत्रिक देश में भारत के नौजवानों की है। आज मुझे खुशी है कि मेरे देश का नौजवान जिसने आजादी की लड़ाई तो नहीं लड़ी है, लेकिन आजादी की लड़ाई का इतिहास पढ़ा है। उन्होंने हमारी विरासत को समझा है, हमारी संस्कृति, विचारों को समझा है।

जिस देश का इतिहास और विरासत समृद्ध होती है, उस देश का भविष्य भी समृद्ध होता है। जब हमने आजादी की लड़ाई लड़ी थी तो दुनिया में कोई सोच भी नहीं सकता था कि सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने वाला नौजवान किस तरीके से आजादी की लड़ाई लड़ कर हिन्दुस्तान को आजाद कराएगा। लेकिन उस समय नौजवानों ने स्कूल छोड़ा, कॉलेज छोड़ा, विश्वविद्यालय छोड़ा, अपनी किताबें छोड़ीं। जो हमारे संस्कार थे, उस संस्कार को लेकर भारत की आजादी के लिए कुर्बानियां दीं, बलिदान दिया। जब आप आजादी के इतिहास पढ़ते हैं, कितने नौजवानों ने अपनी जिन्दगी अपने देश के लिए समर्पण और सेवा के लिए लगा दी। आज उसी कुर्बानी और बलिदान से देश आजाद हुआ। जिस देश का नौजवान राष्ट्र के प्रति इतनी समर्पित सेवा भाव हो, जब दुनिया के अंदर भारत का समय अच्छा हो, अवसर अच्छा हो, उस समय हम दुनिया के अंदर नेतृत्व कर पाएंगे तो नौजवानों की ताकत और सामर्थ्य के कारण ही कर पाएंगे।

जब मैं इस कालखंड को देखता हूं, आजादी के अमृतकाल खंड को देखता हूं तो मुझे लगता है कि आज भारत का नेतृत्व सशक्त है। आज भारत की ताकत दुनिया में ज्यादा है, डेमोक्रेसी में भारत सबसे बड़ा देश है, डेमोग्राफी में हम सबसे बड़े देश हैं, डाइवर्सिटी में हम सबसे बड़े देश हैं।

विशेष रूप से नौजवानों की ताकत और सामर्थ्य, कौशल और कुशलता के अंदर भारत दुनिया का सबसे बड़ा देश है। यह कालखंड में हम सभी के लिए स्वर्णिम कालखंड है। इससे अच्छा समय और अवसर हमारा हो नहीं सकता। जब राजनीतिक स्थिरता हो, नीतियां स्पष्ट हों, ईमानदार शासन प्रणाली हो, दूरदर्शी नेतृत्व हो, दिशा सही हो, उसमें भारत के नौजवानों की साम्र्थय, उनके इनोवेशन, उनकी नई सोच, नई ताकत है तो क्यों नहीं भारत दुनिया का नेतृत्व करेगा। आपके कंधों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

एक लोकतांत्रिक देश के सबसे बड़े लोकतांत्रिक अध्यक्ष होने के नाते मेरी जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि देश में लोकतंत्र के लिए लोगों का विश्वास और भरोसा बढ़ रहा है। उसमें नौजवानों की भागीदारी सक्रिय रूप से बढ़े। हमने जो कुछ भी देश में परिवर्तन किया है, वह इस संसदीय लोकतंत्र के माध्यम से किया है।

हमने 75 सालों में सामाजिक और आर्थिक स्थिति में जो कुछ भी परिवर्तन की दिशा बनायी है, वह लोकतंत्र के माध्यम से ही बनायी है। भारत के अंदर लोकतंत्र की सामर्थ्य इतनी है कि 17 आम चुनावों के अंदर लगातार मतदान में मतदाताओं की भागीदारी बढ़ती रही, विशेष रूप से महिलाओं की भागीदारी बढ़ती रही,

उसी भागीदारी के कारण हमारा लोकतंत्र सशक्त भी हुआ है, प्रबुद्ध भी हुआ है, लोकतंत्र जवाबदेह भी हुआ है, इसीलिए हमारी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है।

हमारे आकांक्षी नौजवान लोकतंत्र में सक्रिय भागीदारी निभाएं। नीतियों, फैसलों, कानूनों के अंदर उनकी सक्रिय भागीदारी हो। यहां लॉ के कई विद्यार्थी बैठे हैं, पोलिटिकल साइंस के विद्यार्थी बैठे हैं, इंजीनियर्स बैठे हैं, अलग-अलग कॉलेज और विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी बैठे हैं, अगर हमें नए भारत का नया भविष्य बनाना है तो हमारी भागीदारी को बढ़ाना होगा। भागीदारी बढ़ाने के लिए लोकतांत्रिक संस्थाओं में होने वाले हर निर्णय के अंदर देश के नौजवानों की जितनी भागीदारी होगी, उतना ही निर्णय अच्छा होगा, उतने ही बेहतर कानून बनेंगे। हम बदलाव लोकतंत्र के माध्यम से ही करते हैं। अभी मैं देख रहा था, वीसी साहब कह रहे थे कि यह लोकतंत्र है, जिस विद्यालय, महाविद्यालय की छात्रा बोलने आती है, उस विद्यालय और महाविद्यालय में जोर से ताली बजाते हैं, यही लोकतंत्र की ताकत है।

हमारे लोकतंत्र की ताकत यही है कि सहमति, असहमति, चर्चा, संवाद, मुद्दों पर डिबेट और जो सर्वसम्मति बनती है, उससे देश आगे बढ़ता है। हमारा लोकतंत्र आजादी के बाद का लोकतंत्र नहीं है।

जब हम लोकतंत्र की जननी का इतिहास पढ़ेंगे तो वैदिक काल से लेकर अभी तक हमारा लोकतंत्र दुनिया के अंदर सबसे पुराना है और मदर ऑफ डेमोक्रेसी के रूप में भारत की पहचान दुनिया के अंदर है। पहचान केवल इसलिए नहीं है, आजादी के बाद भी दुनिया के कई देशों में कई बदलाव हुए, लेकिन हमारे लोकतंत्र की ताकत ऐसी थी कि जनता के सहज रूप जनादेश से सत्ता का हस्तांतरण होते देखा तो दुनिया के अंदर इसी देश ने देखा है।

दुनिया में इतनी डाइवर्सिटी नहीं है जितनी भारत में है, जहां अलग-अलग धर्म हों, जहां सबको मताधिकार का बराबर अधिकार हो। दूर-दराज़ के गांवों तक सहज मतदाता निर्णय करता है, फैसले करता है और जो फैसले करता है, निर्णय करता है, उससे जिसे जनादेश मिलता है, जिसे जिम्मेदारी मिलती है, उसका सहज रूप से हस्तांतरण हो तो इसका उदाहरण कोई है तो भारत देश है।

आपको लोकतंत्र की ताकत को समझना होगा। कई नौजवान लोकतंत्र और राजनीति की भागीदारी से पीछे हटते हैं। अगर हम अच्छे शासन की बात करें, नए भारत की बात करें तो इसे कौन लाएगा? हम मताधिकार से ही लोगों को चुनकर भेजेंगे।

हम जिनको चुनकर भेज रहे हैं, वे अपनी लोकतांत्रिक संस्थाओं में जनता की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को ठीक रखें, उसकी जिम्मेदारी किसकी होगी? केवल मताधिकार देना ही हमारा कार्य नहीं है, हमारा काम यह भी है कि जिनको चुनकर भेजा है, वे सक्रिय भागीदारी निभाएं और जनता की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को पूरा करें। यह भी हमारी जिम्मेदारी है।

आप सब 18, 19 और 20 साल के नौजवान हैं, आपके लिए इससे बढ़िया अवसर नहीं हो सकता। अगर हम 25 साल के इस कालखंड को लेकर चलेंगे, भारत का नौजवान बहुत आकांक्षाओं, उम्मीदों, अपेक्षाओं और जुनून से काम करेगा तो हम दुनिया के अंदर नेतृत्व भी करेंगे और आज भी दुनिया में अगर कहीं किसी की निगाहें हैं तो भारत की ओर हैं, भारत के नौजवानों की ओर है।

जब मैं दुनिया के अंदर कई देशों में जाता हूं तो पता चलता है कि वहां नौजवानों की आबादी कम होती जा रही है। हमारे देश के अंदर नौजवानों की आबादी भी बढ़ी है और कौशल व कुशलता और नये इनोवेशन के अंदर हमारी सामर्थ्य और ताकत भी बढ़ी है। इसीलिए, हमारी जिम्मेदारी ज्यादा बढ़ जाती है।

दुनिया के अंदर हमारे नौजवान ही आने वाले समय में भारत में भी और भारत के बाहर भी नेतृत्व करेंगे। इसीलिए दुनिया की अपेक्षा भारत से ज्यादा है। हमारे प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी कहते हैं कि जब भारत से अपेक्षा ज्यादा है तो भारत के शासन की अपेक्षा और भारत की जनता की अपेक्षा देश के नौजवानों से ज्यादा है। हमारे आकांक्षी नौजवान उस सोच से, उस चिंतन से अपनी कार्य संस्कृति को डेवलप करें, ताकि हम आने वाले समय में दुनिया में नेतृत्व कर सकें। इसलिए, आज कोई ऐसा विषय और क्षेत्र नहीं है, जहां हमारे नौजवान नेतृत्व नहीं कर रहे हैं।

आपने जी-20 के अंदर भारत की अध्यक्षता में भारत के नेतृत्व को भी देखा। दुनिया के बड़े-बड़े विकसित देश भी भारत से अपेक्षा रखते हैं। पूरे विश्व की जो अपेक्षा है, चुनौतियां हैं और संकट है, उसके समाधान का रास्ता हमने निकला है। आज इतना बड़ा देश होने के बाद भी, जैसे वाइस चांसलर जी कह रहे थे कि हमने अपनी जीवन शैली पर्यावरण के अनुकूल, हमने अपने विकास को सस्टेनेबल डेवलपमेंट की तरह और हर विकास के अंदर पर्यावरण और जलवायु पर विशेष ध्यान रखकर विकास की योजनाएं बनाई हैं।

इतना बड़ा देश, जिसकी अपेक्षाएं विकास की दृष्टि से बहुत आगे है, हमने विकास के साथ साथ अपने पर्यावरण तथा जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखकर विकास की जो योजनाएं बनाई हैं, वह भारत की कार्य संस्कृति और भारत की दिशा को दर्शाता है।

एक समय तेजी से औद्योगिकरण करने का समय था, लेकिन हमने कहा कि नहीं, हम औद्योगिकरण पर्यावरण को संतुलित बनाकर करेंगे। इसीलिए, आज जो कुछ परिवर्तन करना है, वह परिवर्तन हम सबको करना है। हमें नई टेक्नोलॉजी को अपनाना है। टेक्नोलॉजी के माध्यम से हम कैसे बेहतर भविष्य बना सकते हैं, उस दिशा में काम करना है।

हमारे जीवन के अंदर और हमारी कार्य प्रणाली के अंदर यदि हम भारत को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं तो हमें दुनिया की हर चुनौतियों का समाधान करना पड़ेगा। दुनिया के अंदर हर इनोवेशन का रास्ता हमें निकालना पड़ेगा। जब हम आत्मनिर्भर भारत बनेंगे, तब हमारे प्रोडक्ट की गुंज पूरी दुनिया के अंदर होगी।

यह सब हमारे नौजवानों को करना पड़ेगा। इसलिए, भारत की आकांक्षा हमारे नौजवानों से है और उस आकांक्षा के अंदर हम साझे भविष्य के साथ सारे विश्व के कल्याण के लिए अपनी कार्य संस्कृति के साथ काम करने जा रहे हैं।

मुझे आशा है कि हमारे नौजवान आने वाले समय में बहुत उत्साह, जोश, उमंग और आत्मविश्वास के साथ बड़े लक्ष्य बनाकर उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूरे जुनून के साथ काम करेंगे। दुनिया की हर चुनौतियों, आपदा और संकट का समाधान भारत में निकलेगा। भारत का नौजवान उन चुनौतियों का समाधान करेगा। यही सामर्थ्य हमारे नौजवानों में होनी चाहिए।

मैं सभी नौजवानों को बहुत बहुत धन्यवाद देता हूँ और अपेक्षा करता हूँ कि जो अलग अलग महाविद्यालय से कॉलेज से नौजवान आए हैं, उन सबको संसद भवन का भ्रमण कराएंगे। उसमें आप सभी आत्मनिर्भर भारत की झलक और आत्मनिर्भर लोकतंत्र की ताकत को देखेंगे। उसमें आप संसद के अंदर हमारे इतिहास और विरासत को भी देखेंगे। उसमें नये भविष्य का भारत कैसे बन रहा है, वह भी देखेंगे।

मैं आप सभी को आमंत्रित करता हूं। आने वाले समय में जो विद्यालय के संचालक हैं, वे भारत की संसद को देखने के लिए योजना बनाएं। मुझे आशा है कि आप संसद भी देखेंगे और संविधान सदन भी देखेंगे। आप सभी को पुनः बहुत बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।